17 अगस्त 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 10 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा दिनांक 27 जुलाई से 05 अगस्त 2014 तक 37वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

शिक्षण शिविर के उद्घाटन का समाचार पिछले अंक में प्रकाशित हो चुका है।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा दोनों समय समयसार की 47 शक्तियों पर एवं डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात:काल पंचास्तिकाय एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त रात्रि में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा षट्कारक, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक (सम्यक्त्व के विभिन्न लक्षणों में समन्वय), पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर व पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा समयसार (गाथा-2 व 3), डॉ0 संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा नयों का सामान्य स्वरूप एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका की कक्षा ली गई। सायंकाल ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अनिलजी भिण्ड, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रमेशजी, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम इत्यादि

(शेष पृष्ठ 6 पर ...)

डॉ. भारिल्ल भारत सरकार द्वारा सम्मानित

नई दिल्ली : यहाँ राष्ट्रीय संग्रहालय जनपथ में संस्कृत दिवस पर भारत सरकार द्वारा आयोजित भव्य समारोह में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को **'संस्कृत सेवा व्रती सम्मान'** दिनांक 10 अगस्त को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में श्री आर.पी. सिसोदिया (भाषा सचिव एवं कुलपति-मानव संसाधन विकास मंत्रालय) एवं डॉ. सत्यव्रतजी शास्त्री (प्रोफेसर) एवं श्री बी.के.सिंह (कुलसचिव) ने 1 लाख रुपये की राशि के अतिरिक्त शॉल ओढाकर, माला पहिनाकर, श्रीफल व प्रशस्ति-पत्र भेंटकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। मंच पर इसके अतिरिक्त लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. भास्कर मिश्र भी उपस्थित थे।

संचालक ने डॉ. भारिल्ल का परिचय देते हुए कहा कि आपने सरकारी नौकरी न करते हुए भी अपने संपूर्ण जीवन में 700 से अधिक संस्कृत विद्वान तैयार किये हैं, जो आज विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत की सेवा कर रहे हैं। आपने 70 से अधिक ग्रंथों का लेखन तथा संपादन किया है, जो अनेक भाषाओं में प्रकाशित होकर लाखों की संख्या में देश-विदेश में घर-घर पहुँच चुकी हैं।

ज्ञातव्य है कि भारत सरकार द्वारा यह सम्मान उन्हें दिया जाता है जो संस्कृत के विकास में अपना महनीय योगदान देते हैं। यह सम्मान पहली बार किसी जैन विद्वान को प्रदान किया गया है। समारोह में संस्कृत जगत के अनेक विद्वान व अधिकारीगणों सहित सैंकड़ों लोग उपस्थित थे।

यह पुरस्कार मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा संस्थान तथा उसके द्वारा संचालित विश्वविद्यालय और लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने संयुक्त रूप से प्रदान किया है।**- डॉ. अनेकान्त जैन**

तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में -

जयपुर व उज्जैन का संयुक्त शिविर

कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 सितम्बर से 5 अक्टूबर तक तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में **निजात्मकेलि शिखर शिविर एवं बाल संस्कार ज्ञान-वैराग्य महोत्सव** का आयोजन होने जा रहा है।

शिविर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ.उत्तमचंदजी जैन, ब्र.सुमतप्रकाशजी, पण्डित विमलदादा झांझरी आदि अनेक विद्वानों का समागम प्राप्त होगा।

सभी साधर्मीजन इष्टमित्रों सहित शिविर में धर्मलाभ लेने हेतु आमंत्रित हैं।

सम्पादकीय –

राग–द्वेष की जड़ : पर कर्तृत्व की मान्यता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(ब) यदि मैं अपने प्रयत्नों से शरीर को स्वस्थ रख सकता हूँ तो प्रयत्नों के बावजूद भी यह अस्वस्थ क्यों हो जाता है? जब किसी को केंसर, कोढ़ एवं दमा–श्वांस जैसे प्राणघातक भयंकर दुःखद रोग हो जाते हैं तो वह उन्हें अपने प्रयत्नों से ठीक क्यों नहीं कर लेता?

(स) यदि मैं किसी का भला कर सकता होता तो सबसे पहले अपने कुटुम्ब का भला क्यों न कर लेता? फिर मेरे ही परिजन–पुरजन दुःखी क्यों रहते? मैंने अपनी शक्ति अनुसार उनका भला चाहने एवं भला करने में कसर भी कहाँ छोड़ी, पर मेरी इच्छानुसार मैं किसी का कुछ भी तो नहीं कर सका।

(द) इसीप्रकार, यदि कोई किसी का बुरा या अनिष्ट कर सकता होता तो आज संभवतः यह दुनिया ही इस रूप में न होती, सभी कुछ नष्ट–भ्रष्ट हो गया होता; क्योंकि दुनिया तो राग–द्वेष का ही दूसरा नाम है, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसका कोई शत्रु न हो; पर आज जगत यथावत् चल रहा है। इससे स्पष्ट है कि कोई किसी के भले–बुरे, जीवन–मरण व सुख–दुःख का कर्ता–हर्ता नहीं है। जो होना होता है वही होता है, किसी के करने से नहीं होता।

लोक में सभी कार्य स्वतः अपने–अपने षट्कारकों से ही सम्पन्न होते हैं। उनका कर्ता–धर्ता मैं नहीं हूँ। ऐसी श्रद्धा से ज्ञानी पर के कर्तृत्व के भार से निर्भार होकर अपने ज्ञायकस्वभाव का आश्रय लेता है। यही आत्मानुभूति का सहज उपाय है।

प्रत्येक द्रव्य व उनकी विभिन्न पर्यायों के परिणमन में उनके अपने–अपने कर्ता, कर्म, करण आदि स्वतंत्र षट्कारक हैं, जो उनके कार्य के नियामक कारण हैं। ऐसी श्रद्धा का बल बढ़ने से ही ज्ञानी ज्यों–ज्यों इन बहिरंग (पर) षट्कारकों की प्रक्रिया से पार होता है, त्यों–त्यों उसकी आत्मशुद्धि में वृद्धि हो जाती है।[१]

जब कार्य होना होता है, तब कार्य के नियामक अंतरंग षट्कारक, पुरुषार्थ, काललब्धि एवं निमित्तादि पाँचों समवाय स्वतः मिलते ही हैं और नहीं होना होता है तो अनंत प्रयत्नों के बावजूद भी कार्य नहीं होता तथा तदनुरूप कारण भी नहीं मिलते।

मिथ्यात्व एवं अनन्तानुबंधी कषाय के अभाव से अकर्तावाद सिद्धान्त की ऐसी श्रद्धा हो जाती है कि जिससे उसके असीम कष्ट सीमित रह जाते हैं। जो विकार शेष बचता है, उसकी उम्र भी लम्बी नहीं होती।

बस, इसलिए तो आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार में जीवाजीवाधिकार के तुरन्त बाद ही यह कर्ताकर्म अधिकार लिखने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। इसमें बताया गया है – जगत का प्रत्येक पदार्थ पूर्णतः स्वतंत्र है, उसमें होनेवाले नित्य नये परिवर्तन या परिणमन का कर्ता वह पदार्थ स्वयं है। कोई भी अन्य पदार्थ या द्रव्य किसी अन्य पदार्थ या द्रव्य का कर्ता–हर्ता नहीं है।

समयसार के कर्ता–कर्म अधिकार का मूल प्रतिपाद्य ही यह है कि परपदार्थ के कर्तृत्व की तो बात ही क्या कहें, अपने क्रोधादि भावों का कर्तृत्व भी ज्ञानियों के नहीं है। जबतक यह जीव ऐसा मानता है कि क्रोधादि का कर्ता व क्रोधादि भाव मेरे कर्म हैं, तब तक वह अज्ञानी है। तथा जब स्व–संवेदन ज्ञान द्वारा क्रोधादि आस्रवों से शुद्धात्म–स्वरूप को भिन्न जान लेता है, तब ज्ञानी होता है।

यद्यपि जीव व अजीव दोनों द्रव्य हैं, तथापि जीव के परिणामों के निमित्त से पुद्गल कर्मवर्गणाएँ स्वतः अपनी तत्समय की योग्यता से रागादि परिणामरूप परिणमित होती है। इसप्रकार जीव के व कर्म के कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है; क्योंकि न तो जीव पुद्गलकर्म के किसी गुण का उत्पादक है और न पुद्गल जीव के किसी गुण का उत्पादक है। केवल एक–दूसरे के निमित्त से दोनों का परिणमन अपनी–अपनी योग्यतानुसार होता है। इस कारण जीव सदा अपने भावों का ही कर्ता होता है, अन्य का नहीं।

यद्यपि आत्मा वस्तुतः केवल स्वयं का ही कर्ता–भोक्ता है, द्रव्यकर्मों का नहीं, तथापि द्रव्यकर्मों के उदय के निमित्त से आत्मा को सांसारिक सुख–दुःख का कर्ता–भोक्ता कहा जाता है, परन्तु ऐसा कहने का कारण पर का या द्रव्यकर्म का कर्तृत्व नहीं है, बल्कि आत्मा में जो अपनी अनादिकालीन मिथ्या मान्यता या अज्ञानता से राग–द्वेष–मोह कषायादि भावकर्म हो रहे हैं, उनके कारण यह सांसारिक सुख–दुख का कर्ता–भोक्ता होता है। वस्तुतः आत्मा किसी से उत्पन्न नहीं हुआ, अतः वह किसी का कार्य नहीं है तथा वह किसी को उत्पन्न नहीं करता, इस अपेक्षा वह किसी का कारण भी नहीं है। अतः दो द्रव्यों में मात्र निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध है, कर्ता–कर्म सम्बन्ध नहीं है।

आत्मा जब तक कर्मप्रकृतियों के निमित्त से होने वाले विभिन्न पर्यायरूप उत्पाद–व्यय का परित्याग नहीं करता, उनके कर्तृत्व–भोक्तृत्व की मान्यता को नहीं छोड़ता; तबतक वह अज्ञानी–मिथ्यादृष्टि एवं असंयमी रहता है। तथा जब वह अनंत कर्म व कर्मफल के कर्तृत्व–भोक्तृत्व के अहंकारादि एवं असंयमादि दोषों से निवृत्त होकर स्वरूपसन्मुख हो जाता है, तब वह तत्त्व ज्ञानी सम्यक्दृष्टि एवं संयमी होता है।

इसप्रकार **विराग** ने अनेक युक्तियों और आगम के प्रमाणों के आधार पर वस्तुस्वातंत्र्य के संदर्भ में – 'दो द्रव्यों में कर्त्ता–कर्म सम्बन्ध' होता ही नहीं है, मात्र निमित्त–नैमित्तिक सम्बन्ध होता है। यह भलीभाँति समझाया, जिसे सुनकर श्रोता बहुत प्रभावित तो हुए ही, लाभान्वित भी हुए। उन्होंने अभी तक ऐसे वीतरागतावर्द्धक और साम्यभावोत्पादक गंभीर व्याख्यान सुने ही नहीं थे। वे अबतक मात्र भगवान महावीर स्वामी की जीवनी और उनके अहिंसा–सिद्धान्त के नाम पर बहुत स्थूल चर्चा ही सुनते आये थे। अतः नवीन विषय सुनकर सभी श्रोता प्रसन्न थे।

आभार प्रदर्शन करते हुए संचालिका ज्योत्स्ना ने भविष्य में भी इसी तरह के लाभ की आशा और अपेक्षा की भावना व्यक्त की। अन्त में भगवान महावीर स्वामी की जयध्वनिपूर्वक सभा विसर्जित हुई। ●

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 30 अगस्त 2014 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 17 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 13 अगस्त 2014 तक हमारे पास 340 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 13 अगस्त 2014 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 330 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वान : 1. कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2. उदयपुर :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **3. जयपुर :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, **4. दिल्ली (आत्मसाधना केन्द्र) :** डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, **5. नागपुर (विद्यालय) :** ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर, **6. सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन, विदिशा, **7. मुम्बई (दादर) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना **8. सम्मेदशिखरजी** : पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, **9. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट)** : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, **10. इन्दौर (रामाशा मन्दिर)** : ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना, **11. मुम्बई (भायन्दर)** : पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, जबलपुर, **12. राजकोट** : पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, **13. अशोकनगर** : ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, **14. मुम्बई (भूलेश्वर) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, **15. कोलकाता** : पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा, **16. अहमदाबाद (नवरंगपुरा)** : पण्डित शैलेशभाई शाह, तलौद, **17. हिम्मतनगर** : पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर, **18. कारंजा** : पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, मंगलायतन, **19. राजकोट** : पण्डित सुनीलजी जैनापुरे, राजकोट **20. उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित पीयूष कुमारजी शास्त्री, जयपुर, **21. मुम्बई (सीमन्धर जिनालय)** : पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड, **22. सुरेन्द्रनगर** : ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल, **23. भिण्ड (परमागम मन्दिर)** : डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर, **24. उदयपुर (सेक्टर–11) :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, **25. सोलापुर :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **26. मलकापुर :** ब्र. संवेगी केशरीचंदजी धवल

विदेश : 1. शिकागो (अमेरिका) : पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, **2. न्यूजर्सी (अमेरिका)** : डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर, **3. लन्दन** : पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, **4. कनाडा :** डॉ. जयन्तीलालजी जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, **2. आरोन :** पण्डित संजयजी इंजी खनियांधाना, **3. इन्दौर (ओम विहार)** : पण्डित सतीशजी कासलीवाल इन्दौर, **4. इन्दौर (कालानी नगर) :** पण्डित पदमचंदजी गंगवाल इन्दौर, **5. इन्दौर (क्लर्क कॉलोनी) :** पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर, **6. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, **7. इन्दौर (छावनी) :** पण्डित जयकुमारजी कोटा, **8. इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित आकेशजी छिन्दवाड़ा, **9. इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, **10. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली, **11. इन्दौर (लश्करी मन्दिर) :** पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, **12. इन्दौर (साधना नगर) :** ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, **13. उज्जैन :** ब्र. अमित भैया विदिशा, **14. कटनी :** पण्डित संतोषजी शास्त्री दमोह, **15 करेरा :** पण्डित किशनलालजी जैन कोलारस, **16. करेली :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, **17. कुचडौद :** पण्डित हुकमचंदजी सिंघई राघौगढ, **18. कोलारस (आदिनाथ) :** पण्डित रमनजी शास्त्री मौ, **19. कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **20. खुरई :** पण्डित नंदकिशोरजी काटोल, **22. खुरई (तारण–तरण) :** पण्डित बाहुबली शास्त्री दमोह, **23. खैरागढ :** पण्डित प्रेमचंदजी खैरागढ, **24. गंजबसौदा (तारण–तरण) :** पण्डित अभिषेक मंगलार्थी उभेगांव, **25. गढाकोटा :** पण्डित अंकितजी शास्त्री जयपुर, **26. गुना (वीतराग–विज्ञान) :** पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, **27. गौरझामर :** पण्डित नितुलकुमारजी शास्त्री इन्दौर, **28. ग्वालियर (थाठीपुर) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, **29. ग्वालियर (फाल्के बाजार) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, **30. ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, **31. छिन्दवाड़ा (गोलगंज) :** ब्र. वासन्तीबेन देवलाली, **32. जबलपुर :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, **33. जबेरा :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, **34. जावरा :** पण्डित फूलचंदजी मुक्तिरवार हिंगोली, **35. टीकमगढ :** पण्डित अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, **36. दलपतपुर :** पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **37. द्रोणगिरी :** पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर, **38. निसईजी :** पण्डित राजकुमारजी सर्राफ, **39. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, **40. परासिया :** ब्र. सुधा बेन छिन्दवाड़ा, **41. बड़नगर :** ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **42. बनखेड़ी :** पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव, **43. बीना :** पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड, **44. बेगमगंज :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **45. भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित मनोजीकुमारजी शास्त्री करेली, **46. भिण्ड :** डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, **47. भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **48. भोपाल (चौक) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, **49. मकरोनिया (सागर) :** पण्डित निर्मलजी एडवोकेट एटा, **50. मगरौन :** पण्डित शुभमजी शास्त्री उभेगांव, **51. मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित मिश्रीलालजी केकड़ी, **52. मन्दसौर (गौल चौराहा) :** डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, **53. रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, **54. रहली :** पण्डित राजेशजी जबलपुर, **55. रांझी (जबलपुर) :** डॉ. राजेशजी शास्त्री विदिशा, **56. राघौगढ :** पण्डित सुकुमालजी शास्त्री गुना, **57. राघौगढ (साडा कॉलोनी) :** पण्डित अशोकजी शास्त्री मांगुलकर, **58. विदिशा (अरिहंत विहार) :** पण्डित चितरंजनजी छिन्दवाड़ा, **59. विदिशा (किला अन्दर) :** डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली, **60. शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित विमोशजी शास्त्री खड़ैरी, **61. शिवपुरी (परमागम मन्दिर) :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, **62. शिवपुरी (शान्तिनाथ मन्दिर) :** विदुषी विमला जैन शिवपुरी, **63. शुजालपुर मण्डी :** पण्डित प्रमोदजी

मोदी सागर, **64. सागर (तारण–तरण) :** पण्डित सुरेन्द्रजी पंकज छिन्दवाड़ा, **65. सागर (महावीर जिनालय) :** पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, **66. सिंगोली :** पण्डित राजेशजी शास्त्री सिंगोली, **67. सिरोंज :** पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी, **68. सिवनी :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, **69. सुसनेर :** पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, **70. सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा एवं पण्डित मधुकरजी जलगांव, **71. हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी, **72. होशंगाबाद :** पण्डित अक्षयजी शास्त्री उभेगांव, , **73. अंजड :** पण्डित स्पर्शजी शास्त्री मेरठ, **74. छिन्दवाड़ा (गांधीगंज) :** ब्र.बहनें देवलाली, **75. निसई (मल्हारगढ) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, **76. निसई (मल्हारगढ) :** विदुषी पुष्पाजी होशंगाबाद, **77. मन्दसौर (गोल चौराहा) :** पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगावां, **78. राघौगढ :** पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री गुना, **79. खनियांधाना :** डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, **80. खनियांधाना :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री देहगांव, **81. इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी, **82. पंधाना :** पण्डित अचलजी शास्त्री खनियांधाना, **83. पथरिया :** पण्डित रूपचंदजी बण्डा, **84. इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित विकासजी शास्त्री, **85. अमलाई :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, **86. विदिशा (सीमन्धर जिनालय) :** डॉ. आर.के. जैन, **87. विदिशा (माधौगंज) :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, **88. बेगमगंज (तारण–तरण चैत्यालय) :** पण्डित प्रखरजी शास्त्री, **89.90.91. गुना :** पण्डित अनिलकुमारजी खनियांधाना, पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री कोलारस व पण्डित अमितजी शास्त्री भोपाल, **92. इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, **93. सागर :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, **94. बीना :** पण्डित अमितजी शास्त्री जबेरा, **95.96. सोनागिर (विद्यालय) :** पण्डित विजयजी शास्त्री बोरालकर व पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री, **97. बदरवास :** पण्डित शुभमजी शास्त्री बण्डा, **98.गढाकोटा :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, **99. सिलवानी :** पण्डित वैभवजी शास्त्री भिण्ड, **100. बण्डा :** पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई, **101. मौ :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री इटावा, **102. बीड :** पण्डित सचिनजी शास्त्री भिण्ड, **103.104. शहपुरा (भिटौनी) :** पण्डित उर्वीशजी पिड़ावा व पण्डित अनुभवजी उदयपुर, **105. अमायन :** पण्डित पवनजी शास्त्री मुम्बई, **106. दलपतपुर :** ब्र.प्रवीणजी देवलाली, **107. द्रोणगिरी :** ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, **108. घुवारा :** पण्डित राहुलजी शास्त्री खडैरी, **109. केसली :** पण्डित चंदूभाई बांसवाड़ा, **110. मौ :** पण्डित रूपचंदजी बंडा, **111. भानगढ :** पण्डित सौरभजी शास्त्री फूप।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1. अलीगढ (मंगलायतन): पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानुपर, **2. आगरा (धुलियागंज) :** पण्डित प्रशांतजी शास्त्री अमरमऊ, **3. एतमादपुर :** पण्डित आकाशजी शास्त्री अभाना, **4. करहल :** पण्डित शुभमजी मोदी खनियांधाना, **5. कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित ज्ञायकजी जैन मंगलार्थी, **6. कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित दर्शितजी शास्त्री बांदा, **7. कुरावली :** पण्डित सुनीलजी देवरी, **8. कुर्राचितपुर :** पण्डित मयूरजी जैन सागर, **9. खतौली (चन्द्रप्रभ जिनालय) :** पण्डित अनिलजी इंजी इन्दौर, **10. खेकड़ा :** विदुषी प्रमिलाबेन इन्दौर, **11. चिलकाना :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री सिलवानी, **12. धामपुर :** पण्डित धीरजजी शास्त्री जवेरा, **13. बड़ौत :** डॉ. नेमचंदजी जैन खतौली, **14. बानपुर :** पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री गडाकोटा, **15. मेरठ (तीरगरान) :** पण्डित सचिनजी अकलूज, **16. मैनपुरी :** पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर, **17. रानीपुर (झांसी) :** पण्डित सुदीपजी बीना, **18. लखनऊ :** पण्डित ललितजी शास्त्री बण्डा, **19. ललितपुर :** पण्डित विनोदजी जबेरा, **20.21. शिकोहाबाद :** पण्डित हेमचंदजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित ब्रजेन्द्रजी शास्त्री अमरमऊ, **22. करहल :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री अमरमऊ, **23.24. अलीगढ (मंगलायतन) :** पण्डित सुधीरजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री दूनी, **25. बानपुर :** पण्डित विकासजी शास्त्री, **26. मडावरा :** पण्डित गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, **27. रुडकी :** डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, **28. चिलकाना :** पण्डित शुभमजी सागर, **29. अमरोहा :** पण्डित सौरभजी शास्त्री खडैरी, **30. सुलतानपुर :** पण्डित सौरभजी शास्त्री खनियांधाना, **31. मुजफ्फरनगर :** पण्डित आशीषजी शास्त्री मडावरा, **32. गुरसराय :** पण्डित सन्देशजी शास्त्री मजगुंआ, **33. सहानरपुर :** पण्डित समकितजी शास्त्री गुना

राजस्थान प्रान्त

1. अजमेर (वीतराग–विज्ञान भवन) : पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, **2. अजमेर (वैशाली नगर) :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, **3. अलवर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, **4. अलीगढ :** पण्डित निवेशजी शास्त्री खरगपुर, **5. उदयपुर (गदिया मन्दिर) :** पण्डित खेमचंदजी उदयपुर, **6. उदयपुर (गायरियावास) :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **7. उदयपुर (देवाली) :** पण्डित वीरचंदजी शास्त्री उदयपुर, **8. उदयपुर (नेमीनगर) :** डॉ. महावीरजी शास्त्री टोकर, **9. उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, **10. उदयपुर (सेक्टर 11) :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, **11. कानोड :** पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा, **12. किशनगढ :** पण्डित सौरभजी शास्त्री कोलारस, **13. कुशलगढ (तेरापंथी) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री भिण्ड, **14. केलवाडा :** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री बमनौरा, **15. कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **16. कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **17. कोटा (रामपुरा) :** ब्र.नन्हे भैया सागर, **18. चित्तौड़गढ (कुम्भानगर) :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **19. जयथल :** पण्डित अरविन्दजी शास्त्री ललितपुर, **20. जयपुर (आदर्शनगर) :** पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, **21. झालरापाटन :** पण्डित विक्रांतजी पाटनी, **22. झालावाड़ :** पण्डित सतेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, **23. डबोक :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, **24. ढूंढारी (केकड़ी) :** पण्डित विवेकजी कोटा, **25. देवली (आदिनाथ) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री कोलारस, **26. पिड़ावा :** पण्डित मनोजकुमारजी जैन जबलपुर, **27. पीसांगन :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल, **28. बयाना (भरतपुर) :** पण्डित धनेन्द्रजी सिंहल ग्वालियर, **29. बारा :** पण्डित रजतजी शास्त्री खनियांधाना, **30. बांसवाड़ा :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, **31. बिजौलिया :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी मंगलायतन, **32. बीकानेर :** पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी, **33. बून्दी (गुरुनानक कॉलोनी) :** पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री जसवंतनगर, **34. बून्दी (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित हर्षितजी शास्त्री खनियांधाना, **35. बोहेडा :** पण्डित आकाशजी शास्त्री टडा,

36. थानागाजी : पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, **37. भीण्डर :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, **38. भीलवाड़ा :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री सोलापुर, **39. लकड़वास :** पण्डित सौरभजी शास्त्री मड़देवरा, **40. लवाण :** पण्डित विमलकुमारजी लाखेरी, **41. लाम्बाखोह :** पण्डित विकासजी शास्त्री बड़ामलहरा, **42. लूणदा :** पण्डित तपिशजी शास्त्री कानोड, **43. वल्लभनगर :** पण्डित अमितजी शास्त्री शाहगढ, **44. वेर :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री गौरझामर, **45. साकरोदा :** पण्डित श्रीपालजी घाटोल, **46. सेमारी :** पण्डित सुनीलजी नाके निम्बाहेड़ा, **47. जयपुर (जयजवान कॉलोनी) :** पण्डित मनीषजी कहान, **48. जयपुर (चितरंजन मार्ग) :** पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, **49. अजमेर (विधान हेतु) :** पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, **50. पीसांगन :** पण्डित प्रबलजी शास्त्री जयपुर, **51. भीलवाड़ा (कावाखेड़ा) :** पण्डित विजयजी शास्त्री सिमरिया, **52.53. अलवर :** पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फुटेरा एवं पण्डित प्रेमचंदजी शास्त्री अलवर, **54.55.56. दौसा :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री भोगांव, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी कोलारस एवं पण्डित प्रमोदजी शास्त्री टीकमगढ, **57. थानागाजी :** पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड, **58. कुचामनसिटि :** पण्डित राजेशजी शास्त्री गुढा, **59. कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचंदजी बजाज, **60. कोटा (विद्यालय) :** पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, **61. टोकर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री मुम्बई, **62. अलवर :** पण्डित ऋषभजी मौ, **63. उदयपुर (सेक्टर 11) :** पण्डित विनीतजी शास्त्री पोहरी, **64. बोहेडा :** पण्डित पारसजी शास्त्री मौ, **65. कुशलगढ (तेरापंथी) :** पण्डित प्रियमजी शास्त्री, **66. बेगू :** पण्डित शुभमजी शास्त्री अलीगढ, **67. कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित पण्डित सौरभजी शास्त्री गढाकोटा, **68. जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रमेशचंदजी लवाण।

गुजरात प्रान्त

1. अहमदाबाद (वस्त्रापुर) : डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय'विदिशा, **2. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित शैलेषभाई तलोद, **3. अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, **4. अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, **5. अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित निखिलजी जैन भायंदर, **6. अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया, **7. अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित निर्मलकुमारजी सागर, **8. हिम्मतनगर :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, **9. राजकोट :** पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, **10. दाहोद :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, **11. तलोद :** पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, **12. वापी :** पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, **13. अहमदाबाद (बहिरामपुरा) :** पण्डित आकाशजी चौधरी खनियांधाना, **14. अहमदाबाद (महावीर नगर) :** पण्डित मयंक ठगन टीकमगढ, **15. अहमदाबाद (नरोडा) :** पण्डित नरेशजी शास्त्री भगवां, **16. जहैर :** पण्डित राजेशजी शेठ मुम्बई, **17. सुरेन्द्रनगर :** ब्र.कैलाशचंदजी अचल ललितपुर, **18. अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढाकोटा, **19.20. राजकोट :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे एवं पण्डित चेतनजी राजकोट, **21.22.23.24. सूरत :** पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन, पण्डित अरुणजी शास्त्री मौ, पण्डित नितिनजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, **25. अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित अभिषेकजी सिलवानी, **26. दाहोद :** पण्डित राकेशजी दोशी परतापुर, **27. सोनगढ (विद्यालय) :** पण्डित मेहुलजी शास्त्री कोलकाता, **28. दाहोद :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री गढी, **29. बडौदा :** पण्डित गुलाबचंदजी बीना, **30. पाली :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री ललितपुर, **31. जैनपुर :** पण्डित प्रीतमजी शास्त्री परतापुर।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. मुम्बई (दादर) : ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **2. मुम्बई (बोरीवली) :** ब्र. कल्पना बेन जयपुर, **3. मुम्बई (भायंदर वेस्ट) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **4. मुम्बई (मलाड) :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, **5. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **6. मुम्बई (अंधेरी) :** विदुषी स्वानुभूति जैन, **7. मुम्बई (एवरशाइन नगर) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, **8. मुम्बई (कांदीवली) :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री भायंदर, **9. मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित रतनचंदजी कोटा, **10. मुम्बई (डोम्बीवली) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री दिल्ली, **11. मुम्बई (दहीसर) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, **12. हिंगोली :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **13. हिंगोली (जिजा माता नगर) :** पण्डित पंकजजी शास्त्री संघई, **14. अकोला :** पण्डित अरुणजी शास्त्री सागर, **15. अनसिंग :** पण्डित अमोलजी महाजन, **16. औरंगाबाद :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, **17. कारंजा (लाड) :** पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, **18. गजपंथा :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, **19. चन्द्रपुर :** पण्डित गणेश वायकोस, **20. चिखली :** पण्डित रोहनजी घाटे, **21. जलगांव :** पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, **22. डासाला :** पण्डित शैलेष घोडके शास्त्री जिंतूर, **23. देवलगांवराजा :** पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, **24. देवलाली :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **25. नागपुर (इतवारी) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **26. नागपुर (विद्यालय) :** ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, **27. नागपुर (विधान) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **28. नातेपुते :** पण्डित शीतलजी दोशी सोलापुर, **29. पुणे (चिंचवड) :** पण्डित जितेन्द्रजी राठी, **30. फालेगांव :** पण्डित दिलीपजी महाजन मालेगांव, **31. बेलोरा :** पण्डित अमोलजी अम्बेकर शास्त्री, **32. वडोत तांगडा :** पण्डित शुभम हाथगिने, **33. वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पण्डित विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, **34. शिरपुर :** पण्डित श्रीसांत अखलकर **35. सांगली :** पण्डित जीवराजजी पुणे, **36. सेलू :** पण्डित आराध्यजी शास्त्री मुम्बई, **37. गजपंथा (विधान हेतु) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, **38. गजपंथा (मराठी विद्वान) :** पण्डित वर्धमान देशमाने शास्त्री, **39. देवलाली (विधान हेतु) :**पण्डित दीपकजी धवल भोपाल, **40. पुणे (स्वाध्याय मंडल) :** पण्डित कमलकुमारजी जबेरा, **41. सेलू :** पण्डित रिमांशुजी शास्त्री, **42. कारंजा (आश्रम) :** पण्डित आलोकजी शास्त्री जालना, **43. कारंजा (वीरवाडी) :** पण्डित चिन्तामण शास्त्री औरंगाबाद, **44.सेलू :** पण्डित अशोकजी शास्त्री चारठाणा, **45. सेलू :** पण्डित अनन्तजी शास्त्री शिरपुर, **46.47.48. नागपुर :** पण्डित मनीषजी सिद्धांत खड़ेरी, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन बसमतनगर व पण्डित आशीषजी शास्त्री बीड, **49.औरंगाबाद :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री रिसोड, **50. एलोरा :** पण्डित गुलाबचंदजी शास्त्री, **51.विहीगांव :** पण्डित प्रशांतजी पाटील, **52. पुणे :** पण्डित अनिकेतजी शास्त्री मौ, **53. बेलोरा :** पण्डित

शांतिकुमार कलमनूरी, **54. वसई रोड :** पण्डित कमलेशजी मौ, **55. अनसिंग :** पण्डित अमोलजी महाजन।

अन्य प्रान्त

1. सम्मेदशिखरजी : पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, **2. कोलकाता :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **3. बेलगांव :** डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, **4. बैंगलोर :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, **5. एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित सोनूजी शास्त्री, **6. यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री ललितपुर, **7. देहरादून :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री नासिक, **8. बेलगांव :** पण्डित सुधर्मजी मुडगली बेलगांव, **9. चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री बंडा, **10. खेरागढ :** पण्डित प्रेमचंदजी जैन देवलाली, **11. कोयम्बटूर :** विदुषी तापसी शास्त्री, **12. रायपुर (शंकरनगर) :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, **13. रायपुर (चूडीलाईन) :** पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी, **14. रायपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा, **15. रायपुर :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री बडामलहरा, **16.17.18.19. सम्मेदशिखरजी :** ब्र. पुष्पलता झांझरी, ब्र. सुकुमाल झांझरी, समता झांझरी एवं ज्ञानधारा झांझरी, **20. कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, **21. बैंगलोर :** पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, **22. देहरादून (विकास नगर) :** पण्डित देवांगजी शास्त्री मुम्बई, **23. बेलगांव :** पण्डित अभिषेकजी उपाध्ये, **24. मनेन्द्रगढ :** पण्डित नवीनजी शास्त्री उज्जैन, **25. नाहन :** पण्डित सिद्धार्थजी सिंघई मुंगावली,

दिल्ली

1. आत्मसाधना केन्द्र : डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, **2. आत्मसाधना केन्द्र :** ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, **3. विश्वास नगर :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, **4. लक्ष्मीनगर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, **5. पारसविहार :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुरा, **6. पारस विहार :** पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, **7. रामनगर :** पण्डित मधुवनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, **8. सरस्वती विहार :** पण्डित राकेशजी लोनी, **9. ऋषभ विहार :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री।

इसके अतिरिक्त दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित अतुलजी शास्त्री नौगामा, पण्डित दीपकजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवजी शास्त्री उस्मानपुरा, पण्डित राहुलजी जैन, पण्डित अभिजीतजी नेजकर, पण्डित सचिनजी सागर, पण्डित सुमतिनाथजी अंबेकर, पण्डित कुलभूषणजी अंबेकर, पण्डित विवेकजी गडेकर, पण्डित अनुपमजी जैन, पण्डित आशू जैन, पण्डित अविनाशजी बांसवाड़ा, पण्डित अनुरागजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित योगेशजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित अमितजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित विपिनजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित तन्मयजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित नीलेशजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित अर्पितजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित निखिलजी शास्त्री ध्रुवधाम, पण्डित सतीशजी शास्त्री महाराष्ट्र, पण्डित अंकितजी शास्त्री खडैरी, पण्डित शौर्यजी शास्त्री मण्डाना, पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाडा, पण्डित अनिरुद्धजी शास्त्री महाराष्ट्र, पण्डित नीतेशजी शास्त्री झालरापाटन, पण्डित समकितजी बांझल गुना, पण्डित समकितजी मोदी दलपतपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री पिडावा, पण्डित दिवान्शुजी शास्त्री पिडावा, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री मौ, पण्डित चेतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित नवीनजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रासुकजी शास्त्री कोटा, पण्डित आदित्यजी शास्त्री कोटा।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त 6.30 बजे से 7.00 बजे तक प्रतिदिन जी–जागरण चैनल पर आने वाले समयसार ग्रन्थ पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का प्रसारण होता था।

37वें शिक्षण शिविर के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुनीता शांतिनाथ की स्मृति में हस्ते श्री शांतिनाथ एवं श्री अजीत जैन बड़ौदा, श्री ब्रजलालजी दलीचन्दजी हताया मुम्बई, श्री भबूतमल चम्पालाल भंडारी बैंगलोर, श्री प्रेमचन्द सुपुत्र तन्मय, ध्याता बजाज कोटा, श्री राहुल कुमार नवीन भाई के.मेहता मुम्बई थे।

इस अवसर पर पंचबालयति विधान का आयोजन किया गया। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, पण्डित कांतिकुमारजी, रमेशजी इन्दौर के साथ टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों ने संपन्न कराये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं श्री अशोकजी जबलपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

अंतिम दिन दिनांक 05 अगस्त को श्री अशोकजी जबलपुर ने सभी विद्वानों एवं शिविरार्थियों का तथा श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सहयोग हेतु आभार प्रदर्शन किया।●

शोक समाचार

हिम्मतनगर (गुज.) निवासी पण्डित मीठाभाई मगनलाल दोशी का दिनांक 12 अगस्त को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देह परिवर्तन हो गया।

पूज्य गुरुदेवश्री से आपका 32 वर्ष की आयु में परिचय हुआ और 35 वर्ष की उम्र में आपने ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। आप अधिकतर सोनगढ में ही रहते थे। हिम्मतनगर मुमुक्षु मण्डल मंदिर व स्वाध्याय भवन की स्थापना में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आप मुमुक्षु समाज के प्रमुख प्रवचनकार विद्वान थे। न केवल गुजरात अपितु देशभर में चलने वाली तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार की गतिविधियों में एवं शिखरजी व चैतन्यधाम में बने संकुलों में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ज्ञातव्य है कि आप पण्डित रजनीभाई दोशी के पिताजी थे। आपका पूरा परिवार तत्त्वज्ञान के संस्कारों से संस्कारित है।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

घर बैठे प्राकृत भाषा सीखें

घर में बैठे हुए प्राकृत भाषा सीखने हेतु बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ (रजि.) श्री धवलतीर्थ, श्रवणबेलगोला–573135 कर्नाटक फोन नं. (08176) 257228 (निदेशक), 09482622158 (रजिस्ट्रार) से संपर्क करें। प्रवेश की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2015 है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन क्या, क्यों और कैसे –
शृंखला की चौथी कड़ी –

आइये हम संयम (मोक्षमार्ग) की दौड़ में शामिल जो जाएँ

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल
(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

जिस प्रकार हम अपने आप को 60–80 या 100 साल तक जीवित रहने वाला मनुष्य मानते हैं और धन–संपत्ति को अपने इस जीवन के लिये हितकारी मानते हैं। अपनी इस मान्यता के चलते अपने इस जीवन को सफल करने के लिये प्रतिदिन की अत्यंत आवश्यक गतिविधियाँ अत्यंत संक्षेप में सम्पन्न करके फिर पूरी निष्ठा और लगन के साथ अपने आपको सम्पूर्ण रूप से शेष दिन भर के लिये अर्थोपार्जन के लिये समर्पित कर देते हैं और अधिक से अधिक धन अर्जित करके अपने जीवन को धन्य और सफल मान लेते हैं। हम अपने सम्पूर्ण जीवन को ख्याल में रखते हुए अपना हर दिन मात्र आज के मौज–शौक के लिये व्यतीत नहीं कर देते हैं।

ठीक इसी प्रकार यदि हमें इस तथ्य पर दृढ विश्वास हो जाए कि हम मात्र 60–80 या 100 साल तक जीवित रहने वाले मनुष्य मात्र नहीं बल्कि अनंतकाल तक रहने वाले भगवान आत्मा हैं तो क्या हम अपना यह मनुष्य जीवन मात्र इसी जीवन के मौज–शौक के पीछे बर्बाद कर देंगे ?

क्या तक हम अपने इस जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं अत्यंत संक्षेप में पूरी करके बचा हुआ शेष सम्पूर्ण समय अपने इस त्रिकाली आत्मा के अविनाशी कल्याण के लिये समर्पित नहीं कर देंगे ?

इसप्रकार हम देखते हैं कि मात्र हमारे इस स्पष्ट और दृढ निश्चय से कि मैं अनादि–अनंत, त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा हूँ; मात्र कुछ वर्षों तक रहने वाला आत्मा और पुद्गल के एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध से बना हुआ एक मनुष्य नहीं हूँ। हमारे जीवन के लक्ष्य और सम्पूर्ण जीवन धारा ही बदल जाती है।

अब आवश्यकता है उक्त तथ्य को जानने, समझने और उस पर दृढ विश्वास करने की। यह कार्य मात्र जिनेन्द्र भगवान की वाणी पर सम्पूर्ण विश्वास और उसके निरंतर अभ्यास से ही सम्भव है। निरंतर अभ्यास और समान विचारधारा वाले आत्मार्थियों का निरंतर सत्संग इसकी लगभग अनिवार्य शर्तें ही है, इनके बिना इस मान्यता पर स्थिर बने रहना हम जैसे कमजोर (छद्मस्थ) लोगों के लिये संभव नहीं है।

यदि हम ऐसे विचार, लक्ष्य और जीवनशैली वाले लोगों के संपर्क में नहीं रहेंगे, निरंतर उनके साथ तत्त्वचर्चा–वार्ता में रत नहीं रहेंगे और जगत के उन अन्य लोगों के सम्पर्क में रहेंगे जिन्हें आत्मा पर और आत्मा की अनादि–अनंतता पर भरोसा नहीं है, जो भोगों में ही सुख मानते हैं, किसी तरह आज का यह दिन और यह जीवन मौज–शौक के साथ व्यतीत हो जाए यही कामना करते हैं और जो निरंतर संसार बढाने में ही दिनरात एक किये हुए हैं तो हम भी उनके तीव्र विचार प्रवाह में बहे बिना नहीं रहेंगे, हम भी उनके साथ भोग और भोग सामग्री जुटाने की दौड़ में ही शामिल हो जायेंगे, धन–दौलत (संसार) बढाने में उनके साथ होड़ करने लगेंगे, क्योंकि हमें तो सबसे आगे रहना है।

यदि हम भोगियों की संगति में रहेंगे तो होड़ भोगों में होगी और यदि हम संयमी लोगों की संगति में रहेंगे तो होड़ संयम ही होगी। निर्णय हमें करना है कि हमें किस होड़ में शामिल होना है, संसार बढाने वाली होड़ में या मोक्षमार्ग की दौड़ में।

यदि हम चाहते हैं कि हम आत्मार्थियों की संगति में रहें, हम स्वाध्याय प्रेमियों की संगति में रहें, एक संयमी समाज के बीच रहें, हम अपनी विचारधारा और लक्ष्य से भटकें नहीं वरन् दिन–प्रतिदिन उक्त मार्ग पर आगे बढे। यदि हम चाहते हैं कि हमारी ही तरह हमारे परिजन और हमारे बालक भी इस मार्ग पर हमारे सहचारी बनें तो हमें उनके लिये आत्मार्थियों का एक समाज प्रदान करना होगा। आत्मार्थियों का ऐसा समाज हमें बनाना होगा, उसे पुष्ट करना होगा।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उद्देश्य आत्मार्थियों के एक ऐसे सुदृढ समाज का निर्माण करना है जिसके बीच रहकर हम अपने लौकिक जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताएं भलीभांति पूरी कर सकें और अपने जीवन के शेष समय का उपयोग अपने आत्मकल्याण के मार्ग में व्यतीत कर सकें। बिना संशय, बिना भटके, बिना रुके।

आइये ! और आत्मार्थियों के इस संगठन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन में शामिल होइये।

सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमन्धर जिनालय (ज्ञानमन्दिरजी) में ज्ञानचन्द्र जैन अरविन्द शास्त्री संजय जैन (हल्ले) गुढा परिवार द्वारा गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 125वीं जन्म जयन्ती के पावन वर्ष में श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही टोडरमल महाविद्यालय के 10 शास्त्री विद्वान भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में टीकमगढ के अतिरिक्त बानपुर, महरौनी, मंडावरा, ललितपुर, सागर, छतरपुर, पन्ना आदि अनेक नगरों से साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पूर्ण हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 29 अगस्त	मुम्बई (भारतीय विद्या भवन)	श्वेताम्बर पर्युषण
30 अग. से 10 सित.	उदयपुर (टाउन हॉल)	दशलक्षण महापर्व
29 सित. से 5 अक्टू.	सम्मेदशिखरजी	शिक्षण शिविर
30 अक्टू. से 6 नव.	जयपुर	कल्पद्रुम मंडल विधान

17 अगस्त 2014, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

यद्यपि गृहस्थावस्था में भी आपने श्वेताम्बर शास्त्रों का अध्ययन-मनन किया था तथापि बाद में दीक्षित होने पर उनका बहुत गम्भीर अध्ययन किया, पर उनके हाथ कुछ भी न लगा। उन्हें ऐसा लगा कि जो मेरा प्राप्तव्य है, वह इनमें नहीं। यद्यपि वे उन पर व्याख्यान करते, प्रवचन करते और हजारों लोग मंत्रमुग्ध भी हो जाते तथापि वे कुछ रिक्तता, कमी अनुभव करते रहते।

स्थानकवासी सम्प्रदाय में उनकी महान विद्वान, लोकप्रिय प्रवचनकार और कठोर-साधक साधु के रूप में प्रतिष्ठा थी। उनके भक्तगण उन पर मुग्ध थे, पर वे नहीं; वे कुछ और खोज रहे थे।

अचानक वि.सं. 1978 में समयसार उनके हाथ लगा, मानो निधि मिल गई। जिसकी खोज थी, वह पा लिया था। उसे लेकर एकान्त जंगल में चले गये। उसके पढने में वे ऐस मग्न हो गये कि जाता समय ध्यान ही न रहा।

उनका अन्तर पुकार उठा कि 'सत्य पंथ निग्रन्थ दिगम्बर ही है' पर .....। फिर वि.सं. 1982 में मोक्षमार्ग प्रकाशक हाथ लगा। यह ग्रन्थ भी स्वामीजी को अपूर्व लगा, यह ग्रन्थराज अपूर्व है भी। यह उनको इतना मन भाया कि इसका सातवाँ अध्याय तो उन्होंने अपने हाथ से लिख लिया, जो आज भी सुरक्षित है।

यह अन्तर्बाह्य का संघर्ष वि.सं. 1991 तक चलता रहा। आखिरकार इस नरसिंह ने उसी वर्ष चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को साधारण गाँव सोनगढ में बाड़ा तोड़ ही डाला, मुंहपट्टी उतार फेंकी और अपने को दिगम्बर श्रावक घोषित कर दिया। क्या विचित्र संयोग है कि यह शुभ कार्य महावीर जयन्ती के शुभ दिन ही संपन्न हुआ।

इस परिवर्तन से संप्रदाय में खलबली मच गई। चारों ओर से भय और प्रलोभनों के पासे फेंके गये, पर सब बेकार साबित हुए। धर्मान्धों ने क्या नहीं कहा और क्या नहीं किया, पर 'मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:ख सुखं-की नीति का अनुसरण करते हुए स्वामीजी अडिग रहे। **(क्रमश:)**

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ कहान नगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 5 से 12 जुलाई तक पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री अष्टपाहुड महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला मांगलिक शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप प्रवचनों (प्रोजेक्टर द्वारा) के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में देशभर से लगभग 650 साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

आवश्यकता

(1) धार्मिक कक्षाओं में अध्यापन हेतु एक पूर्णकालिक शास्त्री विद्वान की। मासिक आय-35000 से 50000 रुपये। **संपर्क सूत्र –** अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल, निर्देशक, जैन अध्यात्म स्टडी प्रोग्राम, सीमंधर जिनालय, कालबा देवी रोड़, मुम्बई फोन - 9821016988

(2) सिद्धक्षेत्र सोनागिर में निर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में सम्पूर्ण सुव्यवस्था देखरेख हेतु एक योग्य मैनेजर (प्रबंधक) की, श्री कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन हेतु एक सीनियर प्राचार्य तथा वार्डन की तथा एक पुजारी बंधु की आवश्यकता है। उक्त महानुभाव की आवास, भोजनादि की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं के साथ-साथ यथायोग्य पूर्ण वेतन दिया जायेगा।

संपर्क सूत्र – महामंत्री,9425054280, 9425148507

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127